भगतसिंह ने कहा...

"भयानक असमानता और ज़बर्दस्ती लादा गया भेदभाव दुनिया को एक बहुत बड़ी उथल-पुथल की ओर लिये जा रहा है। यह स्थिति अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकती। स्पष्ट है कि आज का धनिक समाज एक भयानक ज्वालामुखी के मुँह पर बैठकर रंगरेलियाँ मना रहा है और करोड़ों शोषित लोग एक भयानक खड्ड की कगार पर चल रहे हैं।"

(असेम्बली में बम फेंकने के बाद दिल्ली के सेशन जज की अदालत में 6 जून, 1929 को दिया गया भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त का ऐतिहासिक बयान)

नया वर्ष
सपनों की उड़ानों के नाम
संघर्ष के संकल्पों के नाम
भविष्य में आस्था के नाम!

"एक क्रान्तिकारी सबसे अधिक तर्क में विश्वास करता है। वह केवल तर्क और तर्क में विश्वास करता है। किसी प्रकार का गाली-गलौच या निन्दा, चाहे वह ऊँचे से ऊँचे स्तर से की गई हो, उसे अपने निश्चित उद्देश्य प्राप्ति से वंचित नहीं कर सकती।"

('बम का दर्शन'
भगतसिंह, भगवती चरण वोहरा)

मक्सिम गोर्की

जन्मदिवस (28 मार्च के अवसर पर)

"...जीवन की उपयोगिता आत्म-सन्तोष में नहीं है, जो भी हो मनुष्य उससे ऊँचा तो है ही। जीवन की उपयोगिता है सौन्दर्य में और किसी लक्ष्य के लिए किए गए प्रयत्न की शक्ति में, मानव के प्रत्येक पल का एक उच्चतर लक्ष्य होना चाहिए। रोष, घृणा, अनुताप, वितृष्णा और अन्त में गम्भीर नैराश्य—यही वे शक्तियाँ हैं जिनसे तुम पृथ्वी पर की प्रत्येक वस्तु का नाश कर सकते हो। जीवन की प्यास तुम किसी में कैसे जगा सकते हो जब तुम धीरे से आदमी की ओर इशारा करके बस यह कहना जानते हो कि वह धूल से अधिक कुछ नहीं है?"

('एक पाठक' कहानी से)

नया वर्ष
उन दिलों के नाम
जिनमें अभी भी प्यार करने की
ताकत है
और जिनमें बसी है यह बात
कि बेहतर जिन्दगी के वास्ते
एक ताजा शुरुआत करने के लिए
कभी भी देर नहीं हुई रहती है!

नया वर्ष
तूफानों का आवाहन करते
नौजवान दिलों के नाम
उनके नाम
जो भूले नहीं हैं सपने देखना,
जीवन का सौन्दर्य गढ़ते
शिल्पियों के नाम!

नया वर्ष
नयी यात्रा के लिए उठे
पहले कदम के नाम,
सृजन की नयी परियोजनाओं
के नाम,
बीजों और अंकुरों के नाम,
उड़ने को आतुर
शिशु पंखों के नाम!

नया वर्ष
युवा दिलों के नाम
ज़िन्दा कौमों के नाम,
साहसिक यात्राओं के नाम,
सक्रिय ज्ञान के नाम,
न्याय-युद्ध में भागीदारी की
तत्परता के नाम,
सच्चे प्यार के नाम,
मानवता के भविष्य में
उत्कट आस्था के नाम!

नया वर्ष
विस्मृति के विरुद्ध संघर्ष के नाम,
कल्पनालोक की मुक्ति के नाम,
जीवन, संघर्ष और सृजन के नाम,
काल से होड़ करते
लोगों के नाम!

"शिक्षा की कोई भी प्रणाली इस प्रकार की होनी चाहिए कि वह किसी राष्ट्र की मानसिक-आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। भारत में हम लोग अपनी शिक्षा प्रणाली के दोषों से पूर्णतया परिचित हैं। यह शिक्षा प्रणाली हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करती, वरन् यह एक बड़ा भारी नुकसान कर रही है। हमारे शिक्षितों को यह व्यक्तिगत और सामाजिक उत्तरदायित्व के भार को वहन करने में सर्वथा असमर्थ कर देती है।"

-राहुल सांकृत्यायन

('दिमागी गुलामी' से)

"अगर हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ और बजाय हमारे गोरे आकाओं के हमारे वतनी भाई सल्तनत व हुकूमत की बागडोर अपने हाथों में ले लें और तफ़रीकोतमीज़ (बँटवारा)–अमीर व ग़रीब, ज़मींदार व काश्तकार में रहे तो ऐ ख़ुदा, मुझे ऐसी आज़ादी उस वक्त तक न देना जब तक तेरी मख़लूक में मसावात (बराबरी) क़ायम न हो जाए।"

–अशफाक उल्ला

नया वर्ष

नयी उम्मीदों,

नयी तैयारियों,

नयी शुरुआतों के नाम

पराजय की घड़ी में भी

विजय के स्वप्नों के नाम,

लगातार लड़ते रहने की

ज़िद के नाम

संकल्पों के नाम

जीवन, संघर्ष और सृजन के नाम!